

01.

लेखिका ने अपनी नानी को भी देखा भी नहीं फिर भी उनके व्यक्तित्व से वे क्यों प्रभावित थीं?

लेखिका ने भले ही अपनी नानी को न देखा था, पर अपनी माँ-पिताजी आदि से उनके बारे में सुनकर बहुत जान गई थी। लेखिका की नानी के व्यक्तित्व से प्रभावित होने के निम्नलिखित कारण थे -

(1)

लेखिका की नानी परंपरागत घर में तरीके से रहती थी। वे अपनी बेटी की झाड़ी आजादी के सिपाही से कराना चाहती थी। इससे उसका स्वतंत्रता के लिए जुनूनी होने का पता चलता है। वे अनपढ़ होते हुए भी अपने निजी जीवन में आजाद ख्यालों वाली महिला थी।

02.

लेखिका की नानी की आजादी के आंदोलन में किस प्रकार की भागीदारी रही?

यूँ तो लेखिका की नानी का आजादी के आंदोलन में कोई प्रत्यक्ष योगदान नहीं था क्योंकि वे अनपढ़ परम्परागत परधानशी दूसरों की जिम्दारी में देखल न देने वाली महिला थी, कम उम्र में ही अपनी सृत्यु को निकट जानकर वे अपनी पन्ध्रह वर्षीय बेटी के विवाह के लिए चिंतित हो गई। उन्होंने अपने पति से कहा कि वे उनके परम मित्र 'प्यारे लाल शर्मा' से मिलना चाहती हैं। वे उन्हें बुलाकर कहा कि उन्हीं के जैसे आजादी के आंदोलन में भाग लेने वाले से उनकी पुत्री का विवाह वह खुद तय करें।

(क) लेखिका की माँ के व्यक्तित्व की विशेषताएँ लिखिए।

② वे हमेशा किसी की गोपनीय बात को किसी के सामने प्रकट नहीं करती थी।

③ वे हमेशा सत्य बोलती थी, इससे परिवार के सदस्य उनका खूब आदर करते थे।

(ख) लेखिका की दाढ़ी के घर के साँहोंल का शब्द - चित्र अंकित कीजिए।

लेखिका की दाढ़ी के घर का माहौल अन्य घरों से अलग था।

उसके घर में लड़के-लड़कियाँ में कोई भेदभाव नहीं किया जाता

था। उनकी दादी अपनी पुत्रवधु के शर्मवति होने पर बहुत खुश हुई थी। वे देवी माँ से पुत्रवधु के लिए बेटी पैदा होने की

कामना की थी। उनके घर में स्त्रियों को खूब आदर दिया जाता था।

04.

आप अपनी कल्पना से लिखिए कि परदादी ने पतोहू के लिए पहले बच्चे के रूप में लड़की पैदा होने की मन्नत क्यों माँगी?

लेखिका की दादी लीक से हटकर चलने वाली महिला थी। उन्होंने लड़की पैदा होने की मन्नत इसलिए माँगी होगी क्योंकि उस समय ऐसी मन्नत माँगना और सबके सामने बताना अत्यंत साहसपूर्ण काम था। ऐसा करके वे सबसे अलग दिखने की चाह रही होगी। उनके ऐसा करने का दूसरा कारण यह रहा होगा कि वे स्वयं एक महिला थी। उन्होंने महिला होकर स्वतंत्र जीवन जिया था तथा अपने जीवन में किसी प्रकार की रोक-टोक नहीं देखी थी। इसलिए महिला होनी उनके लिए गर्व की बात थी।

05.

इशाने - धमकाने, उपदेश देने या दबाव डालने की जगह सहजता से किसी को भी सही राह पर लाया जा सकता है - पाठ के आधार पर तर्क सहित हवेली उतर दीजिए।

इस पाठ के अनुसार एक चोर हवेली में दीवार काटकर घुस आया। उसी कमरे में माँजी सोई हुई थी। आहट सुनकर उनकी आँख खुल गई। उन्होंने पूछा कौन? जवाब मिला "चोर"। माँजी ने उसे पानी लाने का आदेश दिया। चोर पानी लेकर आ रहा था कि पहरेदार द्वारा पकड़ लिया गया और उनके सामने लाया गया। माँजी ने लोहे का आधा पानी पीकर उसे आधा पिला दिया और कहा, आज से हम माँ-बेट हुए। अब तु चाहे चोरी कर या खेती। चोर ने चोरी करना

छोड़ कर खेती का काम करना शुरू कर दिया और आजीवन
चोरी नहीं की। यही माँजी उन्हें दंड देती तो चोर नहीं सुधरता।